



क म सा ता न मा वे ल न स्त स न क ना द मा व ल जा न व य ध क ज
क र क न द ॥ द थ ना नी य व र ना द ॥ द कित स म वि व कि स स सि य
उ त स व ज्ञा त मा ॥ ॥ मा ज्ञा न धा न स या जा न वा ज हा की हा वा ना ज द्वा सा त
मा य ध ना वु सा क न हो जा व या द वा जा हा न ज व ना हा व ण व क ॥ को जा स द न
रा मा व वा मा दा या न्वा थ न स व य का व र वा न मा द य का व वा हा लो या क ठा
ह मा ज्ञा न म नि वा जा हा त्रि स व ना स जा य क भ ण व वा य द वि हा व वा ज्ञा
न क य द ना द वा न म द या व स क ज ली हा व द थ ना ज्ञा न म क्री न ज
हा न ग णा व न म ण वि या क थि ना ॥ ॥ थ ना ण य स जे व नी भा न द य

॥ ॥ पृथीन्यास ॥ उं छी वज्र हं हं चक्र हं हं रु ॥ ॥ उं डी ४ रु हं हं रु ॥ ॥ उं वज्र वे
आचनी ये हं हं रु ॥ ॥ उं सर्ववृद्धा किनीय हं हं रु ॥ ॥ व ॥ ॥ उं अकिनीय
हं हं रु ॥ उं लामा हं हं रु ॥ उं खलु वा हं हं रु ॥ उं प्रिनीय हं हं रु ॥ उं वज्र क वा
ठक हं हं रु ॥ उं समय कला ठक हं हं रु ॥ उं वि समय क वा ठक हं हं रु ॥ उं समय वि
समय क वा ठक हं हं रु ॥ ॥ ॥ उं क २ २ च (७) हं हं रु ॥ उं क २ २ च ७ श्री य हं हं रु
॥ उं व २ २ च लामनी य हं हं रु ॥ उं जामय २ मरुनास हं हं रु ॥ उं श्री रुय २ वि व मनी ४
य हं हं रु ॥ उं डी २ खर्व वा य हं हं रु ॥ उं ड २ च क ४ व जी य हं हं रु ॥ उं रु २ ड म च्छाय

[illegible]

सुहंरु ॥ उं ह्वाना सुहंरु ॥ उं सुकला सुहंरु ॥ उं यमजरी सुहंरु ॥ उं यमदू
नी सुहंरु ॥ उं यमद्विषी सुहंरु ॥ उं यममथनी सुहंरु ॥ ५ ॥ उं यन्त्राया सुहंरु
॥ उं गङ्गाया सुहंरु ॥ उं झाला कूला सुहंरु ॥ उं कैलीकतिषदा सुहंरु ॥ उं ज
ट्टहासा सुहंरु ॥ उं लक्ष्मीवर्धकृतासना सुहंरु ॥ उं धालान्धका सुहंरु ॥ उं कि
लिकया सुहंरु ॥ ॥ यस्मै यस्मै नमः ॥ ॥ उं वज्रसत्त्वसगुणैर्वज्रवत्त
त्वात्तमेव वज्रधर्मगयायने वज्रकर्मकवाठक ॥ लासा ॥ उं वज्रवनदं ॥ उं वज्रव
हाणी ॥ उं वज्रमृदं ॥ उं वज्रमृजं ॥ उं वज्रहासं ॥ उं वज्रमालायां ॥ उं व

उगीतं डो॥ उं वज्र नृत्तम् ॥ उं वज्र पूष्यं ॥ उं वज्र धूयं ॥ उं वज्र दीप्यं ॥ उं व
ज्र श्रुत्तम् ॥ उं वज्र दक्षिणं ॥ उं वज्र सवर्णं ॥ उं वज्र वज्रं ॥ उं धर्म वज्रम् ॥ ॥
नमस्तु नमामि नमो नमो ॥ स्वाहा वज्र स्वाहा वज्र ॥ ॥ सुनि ॥ ॥ सर्वरूपज्ञान
सन्तुष्ट उगदर्थ प्रसाद के चिन्तामणि विवाङ्मुक्त धीमन्त्र नमो सुनि ॥ ॥ नमः ॥
उं नमो रत्न वनं वीरसा यदं १२० ॥ उं म हा कल्याणि सै निता यदं १२० ॥ उं उगम वृद्धी
रत्न यदं १२० ॥ उं उग कवा लाघु तीषम रत्न यदं १२० ॥ उं सद सुगुजल स्रवाः
यदं १२० ॥ उं पत्र गुया सोयतम रत्न वीर धावि सै १२० ॥ उं वाङ्मुक्ति नाम वधवा

यहं २२५॥ उं मरु धूमाश्वका च व पूषा यहं २२५॥ ॥ ॐ ह्यगि या न ॥ अटि ति छु
न्या नान न यं यं लं वं हं हं निया न वि छव व ड व ल न कं कं का या व वि कू ठी न म जं य नु
य मं य नु द्यो यं य नु सा य न म धि तं हा या ह हा य सै सा रै किं कि नि जा ल नु वि गै ख चि कि
व ड य ल सु द्यो य नि रू हं सै धि व क म् क म् म हा व ड क म् सै र्ध तु य नु नि च धु य ता
य सै सा रै य म या दि वि रु धि नै ॥ न द्र य वि री का य य वि न तं वि छव य न म पू द ल कू धि
की कं हा या नि तं न द्र य वि आ लि का लि दि छु न न च लु कं सूर्यो म धु लं त सा य वि
आ धा या ध म धु ल सु धी रु क म् म धु ल यै वि ला या ॥ न स र्व ह्य न स त्वा दि ति र्ग

वज्रमन्त्राय हं हं हं हं हं ॥ वं वं वं वं वं ॥ ॥ आ ह्रीं मि ॥ ह्रीं मि वाक् ॥ ॐ ह्रीं
लनय दीया दीया विद्या विषम ह्रीं य ह वा क वा वा रु ना य ॥ इ इ मान स पूर्वे
ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ॥ ॥ वं : ला : सु ॥ ॐ ति पु थ मा ह्रीं मि ॥ ॥ त नो ह्रीं ना ह्रीं मि
॥ ॥ ॥ च च सा ध न ॥ ह्रीं मा नि नै व वि धि ना च च र्क य सा ध ॥ श्री वा च ख धु मः
धृ ह्रीं नि त य क ह्रीं लि ॥ य च क्ष म त पु ति या य स सि धि म नै ॥ ह्रीं मा दि या य नि हि त पु
ति या द नी यी ॥ ॥ ॐ वं ॥ ॐ जिं रं वं ॥ ॐ दि वा न्न ध्वा न पी न ॥ ह्रीं मि च च
सा ध न ॥ ॥ त नो वं ह्रीं वा च म ना दि क कृ त्वा ला को र्क च ह्रीं ना नि वि ल वा ह्रीं

लाका लाः नो य द्वाः न्न हृदि कमत्र च न्द्रासनोपविमधुलाधिविनिवीजनिस्थाः
नयिद्गुवीजपविधामेनमधुलाधिविति समाधुलेयवितावाज्ञानसत्त्वचक्रवजा
कृष्णादिहिराकृष्णपुवेषयद्वासनायां नीलमिव समप्रसृतं स देहकीक
त्वा अतिविशेषा कृष्णवर्णाद्यावमनादिके पूजास्तुतिपर्यान्तकृत्वा श्रुयाया
॥ ॥ देहविधाना ॥ आः पाः आः थोः अः ध्रुवः पूषा न्याहा ॥ दिगववि पूजाः यैः
लाः सुः ॥ स्वाविहिद्वयः मूलमकुन चक्रद्वय ॥ हृदयमकुन ॥ ॥ आकृतिया
या ॥ स्वस्ति वाक् ॥ ईं अः न्नयादि ॥ ॥ कृत्वा यातामा लकविया ॥ ॥ यैः यैः लाः सु

ॐ ह्रीं क्लीं नमो भगवते ॥ ॥ धनं देव पुनिष्ठा दत्त सा दहा कर्म दहाग्नि विधि ॥ ॥ देव गाः
इति या या ॥ गङ्गा देव सर्व देवामी मधुर्लपयमा सुती ॥ अस नाय दस दज ता सु जाया
नमो कयेता ॥ मनु मद्रा समा यूका वजां कृष्णा दियो वाग गाति गत टर्कि ना च्छा
य ह्रीं नवदि समा कयेता ॥ ॥ गत्य देव चर्म धानं तस्थान वक्र वेदता ना ४
हिम धास्ति ती पत्री ॐ आया दित देवता शाय स चन्द्रा कर्म धास्ति वीज डंका
यसं म्बु वनाद विन्द कला ती गत्य ह्रीं वा धि ह्रीं ह्रीं न विता ॥ ॐ देवता इति मूरत
वीज कायेत य वरु लपमाने ॐ कृ वज विता वा ॥ जान ता न वरु वन वदि

मरुतवद्विष्टताद्रुमिदशात्॥ ॐ स्वार्थसिद्धिदोवद्विष्टमकिंदासुषुदेवतागताव
कर्मात्तत्रयेष्टस्त्रयहमन्त्यादिकत्रयत्॥ पायिष्ठस्त्राष्टवापायत्तत्रुष्ट॥ ५
द्वयतावमात्ततोविनिर्गतासर्पिर्महाज्ञानामृतंमर्त॥ तन्नसक्त्यदेवानी
नत्सर्गसचलाचलेनवकत्रातियाहोमसिद्धिसोताव्यसम्यदे॥ प्रिसर्केक
विद्याद्यादिर्यावचचद्रुकाटिहास्त्रुकासिद्धिनसात्रेष्टमकुतकुादितामठ
ती॥ मरुतसर्वोद्रुमिचिन्हाविहिसर्वादितावनाचचसर्वपलायाचरुडका
लाकलिगानल॥ ॥ देवताध्यान॥ आःधूःपाःपूः॥ विहिसर्वाःसख्याइ

नतो

मिः साया॥ देवनाद्रुति याया॥ हस्ति वाक् ॥ ॐ अ० न० द्यादि ॥ ॥ वीः लाः मुः
वृ० ति देवनाद्रुति विधि॥ ॥ नतो पूर्णद्रुति याया॥ वृ० ति दिनक होम विधा
ना॥ ॥ पूर्णद्रुति॥ आः प्रोः पाः आः अः धूपः का विहि द्वय॥ चतु द्वय॥ पू०
हृ० सि द्वय॥ ॥ ॐ समाधिरु ले जै स्वाहा॥ जीवी ल॥ ॥ ॐ आ० ह० न० सिर्व
मि० क० वि० त्र० स० ह० स्वाहा॥ श्री ख० ॥ ॥ ॐ वज्र वास से स्वाहा॥ अ० अ० ॥
ॐ धर्मो धर्मो याज दह २ सर्व विज्ञ यज्ञानि क० पू० स्वाहा॥ चतु न० ॥ ॐ आ०
वज्र धूपे स्वाहा॥ धूनी॥ ॥ ॐ सूर्यो सुकू ले व ले न० याज पू० वि० क० पू० स्वाहा॥

पद्माक्षय ॥ ॥ उँ ठाण छे म म ध वि लो कि न तं तं जा जा जा य पू वि कू नू रू रू दू ला
हू ॥ वा य ॥ ॥ उँ व ज न म् वा य स्ता हा ॥ न म् वा ॥ ॥ उँ व ज पि य रु मा य स्ताः
हू ॥ पि यी छु ॥ ॥ उँ स र्व प्र ण य सै म ना य स्ता हा ॥ स र्व व धि ॥ ॥ उँ स र्व कृ ष्ण य
क ण य स म ना य स्ता हा ॥ य क्षो व धि ॥ ॥ उँ रि का य क य स दो ष ना स ने स्ता हा ॥
प्रि क दू ॥ ॥ उँ रि रु ल रु ल ने स्ता हा ॥ रि रु ल ॥ ॥ उँ म द ना य स्ता हा ॥ म द न
रू ला ॥ ॥ उँ व ज वी ण क या य स्ता हा ॥ वी क म ॥ ॥ उँ व ज वी जा य स्ता हा ॥ स म क
॥ ॥ उँ व ज म द य रू स्ता हा ॥ य म के ण ल ॥ ॥ उँ सूर य स्ता हा ॥ य न्ना ग रु ल

ॐ दह २ हं रु द्वा हा ॥ शि हा स ॥ ॥ ॐ समय आत्रय स्वा हा ॥ अ ३ हा ॥ ॥ ॐ सु ४
समय आत्रय स्वा हा ॥ क ५ हा ॥ ॥ ॐ कमि धनि सर्व सिद्धि करुं डी स्वा हा ॥ नः
कनीय ॥ ॥ ॐ करु २ सर्व कार्य सिद्धि म देवाय स्वा हा ॥ न क च न्य न ॥ ॥ ॐ वज्र द
र्शन रु ले र्ज स्वा हा ॥ को ल रु ल ॥ ॥ ॐ वज्र प्र से स्वा हा ॥ वय य ॥ ॥ ॐ सर्व गो र
जाय स्वा हा ॥ नृ प क षा त्र ॥ ॥ ॐ वजा य र्व स्वा हा ॥ इ र्वा क रु ॥ ॥ ॐ वज्र पि षु का या
य स्वा हा ॥ वि षु का ॥ ॥ ॐ क न्ध म ला य स्वा हा ॥ क न्ध ॥ ॥ ॐ आ ४ हं स्वा हा ॥ मू ला दि
॥ ॥ ॐ वजा लो क डी स्वा हा ॥ म ना ॥ ॥ ॐ वि हि द्य या ॥ च नू द्य या ॥ ॥ यू न्ना इ ति ॥ मः

ॐ आ ४ रु वा नु क स वा नु ऊ र्ग णि षा नु ऊ र्ग रू रू स्वा हा ॥ ॥ म हा वा क ॥ ॐ अ या दि ॥ ॥
अ न न तु वि ता व जी, ह्मा न व द्धि य र्ग क य । ॥ ४ ॥ ४ ॥ ता दि जि नं तु म्, तु क्क वा मि व त्रा यः
ति ॥ ४ ॥ ४ ॥ क म रु ह व न, वि र्ग वा य म हा व न । का म दे द रु वि (४) व च लु सूर्य ग य य
हा ॥ ४ ॥ ४ ॥ थि पा स ध न (४) व, क्क वा ल क्क प न स थ ॥ ४ ॥ ४ ॥ या जा च ना ४ ॥ ४ ॥ ४ ॥ ग न्ध स व कि
न न ॥ ४ ॥ ४ ॥ या य रिं ण ति दे वा ४ ॥ ४ ॥ ४ ॥ अ क नि षा नि वा सी नी ॥ ४ ॥ ४ ॥ म हा या जा क्कि ता य च, नि र्वा न व
हा व र्कि हा ॥ ४ ॥ ४ ॥ नि र्वा ण य ति दे वा ४ ॥ ४ ॥ ४ ॥ ४ ॥ धा वा सा य ण (४) व, मा य ति या क धा गु ष्य, व ४
४ ॥ ४ ॥ धा तु नि र्वा स नी ॥ ४ ॥ ४ ॥ ४ ॥ तु दि य क्कि ता स त्वा, क्कि ता य च रि धा तु के ॥ ४ ॥ ४ ॥ ४ ॥ न स त्त्व चो ४

धूपवाक् ॥ धूपदाना ॥ आकर्षन ॥ ॐ आ ॥ कृष्णवर्जो कृष्णवीजमाकर्षयन् ॥ ॐ वज्रपा ॥
हावीगावयन् ॥ ॐ वज्रमेव वीजमाकर्षयन् ॥ ॐ वज्रावहावीजगावयन् ॥ ॥
ॐ कालसावमहात्मै ह्यस्य वसुवस्ति नमस्तस्माद्विधविन्यासचतुर्त्तमनुपयमश्नु
यी ॥ ॥ स्नानश्रोत्रिमयी ॥ सताषममिधस्तममनुयस्तनयस्तान स्नानाब्जि ॥
श्रोत्रियवर्क ॥ इत्यदरुतिपायानि दिव्यमोक्षप्रदायकं ॥ आयायनोयुगोवायि ॥
प्रिविष्वाश्वायधनगु ॥ तस्य देयवमस्तानी तस्मान्नवद्वयदता ॥ नाहिमध्वहिरो
वर्ग ॥ ॐ आद्यादिदेवता ॥ यज्ञचन्द्राकर्मध्वरु ॥ वीज ॐ काचसीतवीरनादविन्दुः ॥

जातीती वाधिहानानवाधि॥ ॥ उँ अन्नयदीयादीयाविषाविषमदाधियदयाः
कवावाहनायदृष्टमद्रुहैवैहो॥ समयस्तमिति॥ ॥ निलाउहना॥ वलि॥ इकावः
मरवे॥ ॥ उँ डो आ वमनीपुच्छ॥ स्वाहा॥ ॥ उँ आ॥ विज्ञानककुत्सर्ववापविघ्नमात्रानुरसमी
कुरुहैरुद्र॥ ॥ उँ आ॥ विज्ञानककुत्सर्वक्रेष्मन्तिकुरुहैरुद्रस्वाहा॥ ॥ उँ आ॥
विज्ञानककुत्सर्ववज्रमलानपतयेहैरुद्रस्वाहा॥ ॥ उँ आ॥ विज्ञानककुत्सर्वपू॥
धर्मज्ञानसीतायानुरोक्तयेहैरुद्र॥ ॥ उँ सर्वतथागतकाराविघ्नधनहैस्वाहा
यस्कसुगन्धना॥ ॥ अन्ति॥ उँ आ॥ द्यौकल्या॥ स्वादि॥ मइष्टीत्यादि॥ ॥ उँ रुद्रः

सयमपविर्काहिती॥ तू लोका न्नारे द (ता) तु तू वला को द ल सु था। स लो को य रु
स स ल स ल लो को तु व रु सि॥ इन लो के क धु दे (ता) त प लो के ल ला ठ रु। स ल लो
के य म रु सि ल तू व ना नि च तु द्द हा॥ ॥ आ पा यै ला मु॥ दि ग य जा॥ ॐ नु दि
आ वा रु न मू जा॥ डं न मा व ज सा च दि णि श व ज या क्ष य रु श स्वा रु॥ प र्व॥ डं न अ दि क
पि ल रु ल श द रु णि रि ता लि वि य पा रु स्वा रु॥ आ ण॥ डं य मा य स्वा रु॥ या म॥ डं स
व रु त रु यै क य रु रु श स्वा रु॥ न अ रु॥ डं रु श पू ठ रु श णि रि ता लि वि य पा रु स्वा रु
रु॥ व रु ध॥ डं स स रु ख रु रु रु श स्वा रु॥ वा य रु॥ डं ध ना धि ग म न दा य आ ग रु रु रु रु

गानमापर्याह्तिने॥ याचनादिविश्यासहितं च चक्रं धृजपनाकावमुवादिगुणीन
स्यपुष्पावैकुमादिरि॥ कलकीधालयावक्त्राणावाधिविहारीमनपूर्वकल॥ ४॥ निषे
पद्मानिहसहस्रिषिंशमानैपुष्पवजादिरि॥ भद्रयनीयमानैमैठालीनीनिरि॥ अरि
वैकुंठमहावजीविधुवैकनमस्तुतेददामि सर्ववृद्धानीति शुभ्राक्षयसमूहवै॥ ५॥ उंस
वैकनथगतसमयति॥ यद्वैकनै सर्ववृद्धानीति धुवैकनमस्तुते यथावै पूजना॥ ४
थयमकुटपचक्रकलाहवै॥ उंसर्ववृद्धचूणमसिमकुटपुतिचक्राह॥ मकुटनै॥ या॥
॥ ॥ उंसर्ववृद्धचूणमसिमकुटपुतिचक्राह॥ मकुटनै॥ या॥
॥ ॥ उंसर्ववृद्धचूणमसिमकुटपुतिचक्राह॥ मकुटनै॥ या॥

रिषिऋगं॥ उँ धर्मवती अरिषिऋगं॥ उँ कर्मवती अरिषिऋगं॥ उँ उदक
मकूटवज्रवधुनामारिषिकायऋषिका॥ उँ वक्रवर्द्धरहायकायवज्रपूषीप
निचुल्लारु॥ पूषीन्यास॥ उँ आ४ आर्योवाचनायवज्रपूषीपनिचुल्लारु॥ उँ आ४
आर्यो अश्लेषायवज्र॥ उँ आ४ आर्यो नलसम्भवायवज्र॥ उँ आ४ आर्यो अमिताला
यवज्र॥ उँ आ४ आर्यो अमीषसिद्धायवज्र॥ उँ आर्यो वाचनायवज्र॥ उँ आर्यो
मामकियवज्र॥ उँ आर्यो पाण्डुलायवज्र॥ उँ आर्यो तात्रायवज्र॥ पञ्चपदात्रप
जा॥ ॥ लाङ्का॥ मुनि॥ वाचनादिविद्यायतुदविष्णवतादितथागतासम्बद्धव

[illegible]

इयविचंकाप्रधमिभुले, ठिकोसचकवर्धूका लाकितीनदपचिककाचनप्रिम
हुकयाचंआकाचसपमलाउरने, नगुह क्कदिके॥ उँहूँगोँडोखँचामाँपाँताँकाचउत
दधिषिगयक्षमृनयक्षप्रदीपयूयसनिषाश्रवायूयत्रिपुङ्गविवाग्नितापविलिन
बीजाक्षयादिके, महिनवतानरुद्धवयूयदृष्टुनगुणाचदवर्धूहँहवअध्रुकाचान
नूकमेधाययूयविस्मितानू॥ उँआ॥ हँकाचाननूकमेधाययूयविस्मितानू॥ नह्य॥
सूटितयस्मिनाददसदिब्बहिंवीचव्वीसीह्मनामतेप्रदीपसंक्रमसवायनप्रिच
केमाकृष्यजगदर्थकाचयित्वासमापहिपूर्वके॥ पादार्थ॥ पृथग्या॥ चलागुदि

यत्स्य पचाय पूजा ॥ लाङ्का ॥ मुनि ॥ अलिकालि वलित वलुस्य सहाव कच ४४
यान्ते रूकाय दृष्टु ॥ उँ अन्तो न्या नगता ४ सर्व धर्मा अर्थ ह्या नगता य विष्णु सर्व ध ४
र्मा ४ रू ॥ दिवेषु माने समययमाने तद्वय वाच वनपुमाने यतन सतन दिवन महा
हता ॥ अँति वलि मडा ॥ ॥ उँ कच २ कच २ वन्ध २ गाय २ कौतय २ डौ २ डरू २
रू २ दरू २ पच २ हक २ वस २ चि चान्क मा ला वली विन्य २ छुआ रु वि यरू रू २ ॥
गृह २ सफ पाता लहा ननु डं ग सय वा त डूय २ आक २ डौ रू २ डौ २ हौ २ डौ २ रू
२ किलि २ सिचि २ चिचि २ चिचि २ रू २ ॥ उँ वजा वलि हा ४ ड ४ रू वं हा डो ४ व ड ४

[illegible]

पतिषु दशमं तव सुता सोमं तव अनन्य कामं तव सुता सोमं तव सर्वसिद्धिमेव यच्छ
सर्वकर्मसु च मन्त्रिर्ह (७) यः कश्चिद् रुद्र रुद्रोऽहं तव वनवज्रं द्रुक् कामं मन्त्रं रुद्रं
कोरुष्वमाहासमयं सत्कुरु ॥ उवजममुलम् ॥ ॥ ॐ नमि वि सङ्ग न ॥ ॥
संक्रियं च कर्म च मिनि ॥ ॥ ७७ ॥ ॥ उ नमः ७ ७ वज्रं सत्कुरु ॥ सूर्यो वा ॥ गुप्
या दार्घ्यं ॥ पूजां यो यं के ॥ वं च गवाक्षं धनया य पश्च गवा वि य ॥ गुप् मं तुल
सिन्धु च पूजा ॥ शिसमाधी देवु श्रीत गो कलेष्म च व ॥ ध्यान ॥ उवजामृगो दकथं रुद्रं ॥
तपे २ म हातपे स्त्रा रु ॥ मन्दा की नी जल लूयं विहावे ॥ म नी ठी वं का च ऊं पत्रिन

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥

नै नाना रत्न मयै कवचौ माका च उष्टु क धामा द या न य ह वै वि ता वो ॥ न द न र स
वी उ ची क्ता य वि ना म म स ह दे व ता वि वि र्ण य ह द ॥ वी ज म य र खी क ॥ (१) ह्या न स त
मा नि य पू र ता द ह ष्ठा पा या च म ना दि के क ल्पा द या तू ॥ न च स म य स त्त प वे (१) म
हा रा ग ड वि रु य वा धी चि रु चू पा म न ह त यी नै ॥ वि दू च स म य द व ता ह्या न द
व त यी की रु ता चि त्त य तू ॥ उ स र्व त था ग त म ह्या यो (१) ह्य वी हं ॥ धा य ता ॥ उ व ज
य हं ॥ धा य ॥ नि वा ज न ॥ उ आ च ज य क स र्व या प वी स म या न ह सि क्क चू हं रु
॥ सी व ज वा ॥ उ आ व ज क र्म स र्व के (१) प क ण ह्या नी क चू हं रु ॥ ज य स सी

काष्ठ लना गुचम कुक्षया मृदिता समिलिता यच्च विमया याचमनी निमित्ता
न सा चलाया कृता स्मृता धर्मम धानूना यच्च ॥ इज्याया गता छत्रा अर्चमनि पृस
ल्लिता न इव गमाध्य पा फाष्ठ पुलाक चिनिवासनी ॥ अति मृषिल्लिता सता सा धू
न निमित्ता यच्च दद्यात्समिष्ठ वस्तु ॥ जाष्ठ ग पृष्ठ य ॥ स म्बुद्धा कृष्ण वका ल्प
व खड्ग वृक्षान रूपानि ॥ यत न च कते जष्ठ देवा स च न क्रवका ॥ यिनी गता समवी धान
न गे गता य स्मृते ली ॥ दानपति ॥ स्वस्ति वा क ॥ ६० नित्य कृत्तिया विधिस पूर्ण ॥ अत्र
दानपति जजमान च पाशा गोत्रया वडा ना इ धी त गता ज सिंघना ज पून सिंघना व

१३ नमो वसुधायै ॥ सुखाद्युत्तरमधुलसिद्धलवङ्गादङ्गलि
कलसन्नागर ॥ देववृक्षादावभ्रकरवन्ध्रयनिजात्रसजा
नयारक ॥ चोतसिधनरुद्रस्नानकूपमतावियउत्तयाम ॥

३६। मा॥ ॥ धाम्नि य नि ग र म धु ल दान के ओ क वा न व ली
वि स ज न ४॥ धा मा न धा म ॥ सा न ध म् ७ स रू त ष्ठा न व यो वि ७
ध क स म र नु वा चा गुं ता व म धु ल म रू म ॥ स र्व ता धा ग ता ७ म रू स र्व
ता धा ग ता ल य स र्व ध म् ७ ले या त्मा द ७ म धु ल म रू म ॥ स र्व ल
रू स म् ७ सु स ल क न व त्रि त स म न्क र द्रु का या गुं ता व म
ल म रू म ॥ स र्व स न्क म ता वि रू सु क यु की ति नि मि तं ४ स म न्क र
द्रु सि ला गुं धा व म धु ल म रू म ॥ ॥ द्वा क्ता न्क क्ता न्क म धु ल

तय ॥ ॐ ॥ य क लि ध न क वि ध न क पि ॥ भू ग यु ग यु कं स्वा दा ॥ म
धु ल स सि ध ल त य के ॥ ॐ ॥ ग्राम सा ल क्री त नि वा ण नि य स्वा
दा ॥ ॥ द सा के ण न र वं का न ॥ का य के तु वि धी वा र्य वा वि के तु
य तु वि धी न्मा न सं त्रि य का जं य ॥ द ष म के ण न ० ति स्मृ त ॥ ८ ॥
॥ का य स पि ल या दा या व च्छु कि न या नि स्मृ य म तं ॥ भ व या द्रि व
का य म तं ॥ भ व या व म्भु जा र य दा ॥ का य म तं ॥ का स ण य
ल न ध म तं ॥ ॥ ॥ ता का य स लि ले न या दा या व ॥ ॥ ह न व र न

मादायायकुंरुसखाद्वायमतवभवयताकाकवरनद्वायमत
ववजमिउरुयमतउभवरखायमतवथयतावरननयादा
याय॥॥मनसानयादायायकुंरुनसनेधकाआयुमरव४
स्नानसेनमतिउभुयायाजयायमतवमिरवानवाहागुनिम
खादाधममतवभवकाखावाखायादावत्वाकमतवथ
यतामनसानयादायाय॥थुद्रितायायतावतिमानधकंठरइ
स्नादकेवा॥॥हनमद्योनसवनयमतवजाहानयमतव